OPEN ACCESS

Ind. Jr. of Mod. Res. and Rev *PEER-REVIEWED JOURNAL* *Volume 4 Issue 10 [Oct] Year 2026*

Indian Journal of
Modern Research and Reviews

This Journal is a member of the *'Committee on Publication Ethics'*

Online ISSN:2584-184X

Research Article

आधुनिक परिवेश में स्वामी विवेकानन्द के कर्मयोग की उपादेयता

नीरज डोभाल [1*],डॉ. विपिन कुमार भट्ट [2]
[1] शोधार्थी, स्पर्श हिमालय विश्वविद्यालय, देहरादून, उत्तराखंड, भारत
[2] शोध निर्देशक, स्पर्श हिमालय विश्वविद्यालय, देहरादून, उत्तराखंड, भारत

Corresponding Author: * नीरज डोभाल

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.23218646

सारांश

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार कर्मयोग केवल कर्म करने का नाम नहीं है, बल्कि निःस्वार्थ भाव से कर्तव्य का पालन करना और मानव सेवा को ईश्वर की सेवा मानना है। उनका मानना था कि प्रत्येक मनुष्य के भीतर अपार शक्ति विद्यमान है। आवश्यकता है कि व्यक्ति अपने आत्मविश्वास और शक्ति को पहचानकर उसका सही उपयोग करे।

स्वामी जी ने मनुष्य को कर्मठ, साहसी, आत्मनिर्भर और चरित्रवान बनने की प्रेरणा दी। उनके अनुसार व्यक्ति को अपने कर्मों के फल की इच्छा न रखते हुए अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिए। कर्म करते हुए मन को शुद्ध रखना और दूसरों की सेवा करना ही कर्मयोग की वास्तविक भावना है।

स्वामी विवेकानन्द ने युवाओं को विशेष रूप से कर्म, शक्ति, आत्मविश्वास और सेवा का संदेश दिया। उनका मानना था कि युवा वर्ग ही समाज और राष्ट्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। उन्होंने भारतीय समाज में व्याप्त कुरीतियों और दुर्बलताओं को दूर करने तथा लोगों में आत्मविश्वास जागृत करने का प्रयास किया।

उनके कर्मयोग का उद्देश्य केवल व्यक्ति का विकास नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र का विकास भी है। यदि प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्तव्य को समझकर निःस्वार्थ भाव से कर्म करे, तो समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाया जा सकता है और राष्ट्र को मजबूत बनाया जा सकता है।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2584-184X
- **Received:** 07-09-2026
- **Accepted:** 02-10-2026
- **Published:** 07-10-2026
- **MRR:**4(10); 2026: 17-19
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

डोभाल नी, भट्ट वि कु. आधुनिक परिवेश में स्वामी विवेकानन्द के कर्मयोग की उपादेयता. Indian J Mod Res Rev. 2026;4(10):17-19.

Access this Article Online

www.mrrjournal.in

मुख्य शब्द: स्वामी विवेकानन्द, कर्मयोग, निःस्वार्थ कर्म, कर्तव्य, आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता, मानव सेवा, समाज सेवा, युवाशक्ति, चरित्र निर्माण, राष्ट्र निर्माण भारतीय संस्कृति, आध्यात्मिकता, मन की शुद्धि, सामाजिक सुधार, राष्ट्र उत्थान, कर्मठता, साहस, शक्ति।

प्रस्तावना

स्वामी विवेकानन्द आधुनिक भारत के महान विचारक, समाज-सुधारक और युवाओं के प्रेरणास्रोत थे। उन्होंने भारतीय संस्कृति, आध्यात्मिकता तथा कर्म के महत्व को विश्व के सामने प्रस्तुत किया। स्वामी विवेकानन्द के विचारों में कर्मयोग का विशेष स्थान है। उनके अनुसार मनुष्य को अपने कर्तव्यों का पालन निःस्वार्थ भाव से करना चाहिए तथा कर्म के फल की चिंता किए बिना समाज और राष्ट्र की सेवा करनी चाहिए। कर्मयोग के माध्यम से व्यक्ति अपने मन को शुद्ध कर सकता है, आत्मविश्वास विकसित कर सकता है और अपने जीवन को सार्थक बना सकता है।

संत समाज की धरोहर होते है गोतम बुद्ध हो या महावीर या आधुनिक कल के युग नायक , युवाओं के प्रेरणाश्रोत स्वामी विवेकानंद सभी ने चाहे कुछ वर्षो तक एकांत साधना की हो परन्तु समाज रूपी विशाल कर्मक्षेत्र को अनंतः अन्ततः कर्मस्थली बनाकर स्वम को समर्पित कर कर दिया स्वामी जी कोई कंठी माला जपने वाले बाबा ही नहीं थे बल्कि उनकी रगो में कृष्ण के गीता कर्म योग परिलक्षित होता था उन्होंने संकल्प लिया कि भारतीय संस्कृति के अस्तित्व को पुनः गौरव प्रदान करने हेतु संघर्ष करेंगे और निकल पड़ा एक संन्यासी मात्र कुछ कटिवस्त्र के साथ करोड़ों दीन-हीन आत्माओं के के आशुओ को पोछने के लिए।[1]

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार — कर्मयोग के द्वारा मन को शुद्ध करना है। शुभ अशुभ कर्म किये जाने पर शुभ या अशुभ परिणाम प्राप्त होता है। कारण विधमान होने पर उसे कोई रोक विश्वास सकता है। आगे स्वामी जी कहते है की ईश्वर पर विश्वास से पहले मनुष्य को स्वम पर विश्वाश करना होगा जिसे स्वम पर विश्वास नहीं उसे ईश्वर पर विश्वास कैसे हो सकता है। इसलिए हमे आगे बढ़ने के लिए यह आवश्यक है। पहले हम स्वम पर विश्वास रहे फिर ईश्वर में स्वामी जी सच्चे अर्थो में कर्म योगी थे संसार को छोड़कर स्वछंद और शांत जीवन में रहकर ईश्वर की उपासना करने की अपेक्षा संसार में रहते हुए ईश्वर की उपासना करना आपकी नजरो में कठिन है।

स्वामी विवेकानंद के अनुसार कर्मयोगी का जीवन मन्त्र है **मै नहीं वरन तू** और आत्मोत्सर्ग का कोई भी परिणाम उसके लिए अधिक नहीं होता। किन्तु ऐसा वह श्वर्ग जाने या यश कमाने के इच्छा से नहीं करता है।[2]

स्वामी जी भारतीय समाज मै फैले घृणा , द्वेष , जातीय कुरीतियों के खिलाफ चट्टान कि भाति खड़े दिखाई पड़ते उदाहरण इसके लिए उन्होंने शंकराचार्य पर भी ऊँगली उठाने से कोई संकोच नहीं किया वे ७ अगस्त १८८९ ई को श्रीमत प्रमदा दस जी को लिखे एक पत्र मे कहते उदाहरण कि जहा कही कि भगवान शंकराचार्य अपने वेदांत सूत्रों के भाष्य मे स्मृति का उदाहरण देते है तो वे प्रायः महाभारत का परमाण देते है। परन्तु इस बात का पूरा परमाण वनपर्व के अखगरो वाख्यान में एवं उमामहेश्वर संवाद मे तथा भीष्म पर्व मे पाकर कि जाती का आधार गुणधर्म है। क्या इसका उल्लेख उन्होंने अपने ग्रंथो मै किया है।[3]

स्वामी जी चाहते थे राष्ट्र को उन्नति के शिखर पर पहुंचाया जा सकता है परमात्मा ने सभी मनुष्यो को सामान रूप से पैदा किया है। तो समाज मै यह भेद भाव क्यों है? स्वामी जी एक सच्चे कर्मयोगी थे उन्होंने न केवल कर्मयोग का उपदेश मात्र दिया बल्कि उसको जीवन में अपनाया भी मात्र ३९ वर्ष की अल्पावस्था में अनहोने जो कार्य किया उसकी मिसाल मिलाना काथिन है वह धर्म की आड़ में होने वाले सामान्य जन की शोषन के भी प्रबल विरोधी थे। प्राणी मात्र के आत्म तत्व का उपदेश देते हुए वे चाहते हैं की जो उच्च नीच संघी है। परम साधु है उसे प्रत्यक्ष जानने योग्य सर्वशक्तिमान ईश्वर की उपासना करें बाकी सब को नष्ट कर दो जिसमें नए पूर्व जन्म है ने पर जन्म ने मृत्यु है ने आवागमन जिसमें हम सदा एक होकर रहे हैं। इस ईश्वर की उपासना करें ।[4]

स्वामी जी धर्म के नाम पर होने वाले पाखंड से अत्यंत शुद्ध रहते थे सच्चे कर्म योगी को ऐसे पाखंडों से बचने की सलाह दिया करते थे। सच्चा कर्मयोगी मरने जीने की परवाह नहीं करता बल्कि अपने कार्यो को कर्तव्य समझ कर करता है किसी दुखित पीड़ित मानव को छोड़कर माला घुमाना मुर्खता हैं। स्वामी विवेकानंद जी कहते हैं। कि जहां पर महामारी हुई हो जहां पर लोगों को दुख ही दुख हो जहां दुभिरक्ष पड़ा हो चला जा उसे और उन लोगों का दुख दूर कर, अधिक से अधिक क्या होगा मर ही तो जाएगा तेरे मेरे जैसे ना जाने कितने कीड़े पैदा होते रहते हैं मारते रहते हैं। इससे दुनिया को क्या हानि लाभ है एक महान उद्देश्य लेकर मर जा मर तो जाएगा पर अच्छा उद्देश्य लेकर मारना ठीक है ।[5]

इसी तरह एक अन्य पत्रावली में स्वामी जी कहते हैं। मृत्युपर्यंत कम करो मैं तुम्हारे साथ हूं और जब मैं ना रहूंगा तब मेरी आत्मा तुम्हारे साथ काम करेगी। यह जीवन आता है और जाता है नाम यश भोग सब थोड़े दिन के हैं संसारी कीड़े की तरह करने से अच्छा है कि कर्तव्य के क्षेत्र में सत्य का उपदेश देते हुए मारो ।[6]

इस प्रकार हम देखते हैं कि स्वामी विवेकानंद स्वयं कर्मयोगी थे एवं सामान्य जन्म से भी कर्म योगी बनने की अपेक्षा रखते थे। भारत की अवनति का एक प्रमुख कारण यहां की काहिली काम चोरी भी है हजारों साल की गुलामी के बाद प्राप्त स्वतंत्रता के 80 साल के बाद भी भारत आज विकासशील देश है। इस मूल कारण भी राष्ट्रनिर्माताओ द्वारा अपनी कर्तव्य कर्म को पूर्ण निष्ठा के साथ पालन ने करना भी है स्वामी जी चाहते थे। कि भारतीय जनमानस कर्म सील बन मृत्यु पर्यंत वह एक सच्चे कर्म योगी की भांति जीवन गुजरे श्रीमद् भागवत गीता में भी कर्म की कुशलता को योग बताया गया है। वास्तव में कर्म एक ऐसा तत्व है जिसका उपयोग प्रत्येक मनुष्य को अनिवार्य रूप से करना पड़ता है निष्काम भाव से किए गए कर्म को ही श्रेष्ठ कर माना गया है जो व्यक्ति फल को छोड़कर कर में ही निप आनंद लेते हैं। वह माया के बंधन में नहीं पढ़ते उनके चित्र में बंधानकारी संस्कारों का जमाव नहीं होता फल स्वरुप आवागमन से ऐसे मनुष्य शहर से छुटकारा पा जाते हैं। स्वामी विवेकानंद चाहते थे कि लोग कर्म सील बन बलशाली बनी वह कहते थे की श्रीमद् भागवत गीता का पाठ करने की अपेक्षा तुम फुटबॉल खेलने से सूरत के आती समीप पहुंचोगे मैं अत्यंत साहस पूर्वक यह बात की है। और यह कहना अत्यंत आवश्यक है कारण मैं तुमको बयान करता हूं मैं जानता हूं कंकर कहां छुपाता है मैंने कुछ अनुभव प्राप्त किया है बलवान शरीर से और मजबूत पुटठो से तुम श्रीमद् भागवत गीता को अधिक समझ सकोगे ।[8]

उपयुक्त कथानक में हम देखते हैं कि वह श्रीमद् भागवत गीता पढ़ने की अपेक्षा फुटबॉल खेलना ज्यादा पसंद करते हैं। परंतु उनका यह

अर्थ नहीं है कि वह श्रीमद् भागवत गीता का विरोध या उपवास कर रहे हैं। बल्कि यह है कि मनुष्य का शरीर जितना स्वस्थ एवं बलशाली होगा वह उतना ही धर्म ग्रंथो के अर्थ समझ सकेगा। वह चाहते थे कि मनुष्य दिन हैं दुर्बल न रहे बल्कि वह शक्तिशाली बनी दुनिया में बकरी की ही बलि चढ़ाई जाती है शेर की बाली कोई नहीं चढ़ा था। स्वामी विवेकानंद जी ऐसे मात्र सो शक्तिशाली मनुष्य की खोज करते रहे जो यदि मिल जाए तो राष्ट्र का नक्शा सहज में बदल जा सकता है। उनके शब्दों में केवल मनुष्य की आवश्यकता है और सब कुछ हो जाएगा किंतु आवश्यकता है। वरियावन तेजस्वी महा संपन्न और अंत तक कपट रहित नवयुवकों की इस प्रकार के सो मनुष्य को संसार के सभी भाव बदल दिए जा। [9]

वर्तमान समय में स्वामी जी के विचारों की सार्थकता और हो गई है। आज का युवा मैदान में खेलने की अपेक्षा मोबाइल में खेल रहा है। जिसके कारण कब जवानी आई कब बुढ़ापा में बदल गई समझना मुश्किल है। आज प्रत्येक व्यक्ति यदि अपने कर्तव्य की जिम्मेदारी को समझते हुए कार्यशील बन जाए तो राष्ट्र की दिशा धारा सहज में बदली जा सकती है।

निष्कर्ष

अतः कहा जा सकता है कि स्वामी विवेकानन्द का कर्मयोग व्यक्ति, समाज और राष्ट्र—तीनों के विकास का मार्ग प्रस्तुत करता है। उन्होंने मनुष्य को निष्क्रियता छोड़कर कर्म करने, आत्मविश्वास रखने और निःस्वार्थ भाव से मानवता की सेवा करने की प्रेरणा दी। उनके विचारों में कर्म केवल व्यक्तिगत सफलता का साधन नहीं, बल्कि आत्मविकास, समाज सेवा और राष्ट्र निर्माण का माध्यम है। आज के समय में भी उनके कर्मयोग के विचार युवाओं को अपने कर्तव्य के प्रति जागरूक, साहसी, आत्मनिर्भर और समाज के प्रति उत्तरदायी बनने की प्रेरणा देते हैं।

सन्दर्भ सूची

1. Vivekananda S. भारत का ऐतिहासिक क्रमिक विकास एवं अन्य प्रबंध. p. 22.
2. Vivekananda S. भारत का ऐतिहासिक क्रमिक विकास एवं अन्य प्रबंध. p. 23.
3. Raju Raj. स्वामी विवेकानंद पत्रावली. मेरठ: तुलसी साहित्य पब्लिकेशन, गांधी मार्ग; p. 13.
4. Bhawani Lal. स्वामी दयानंद और स्वामी विवेकानंद: एक तुलनात्मक अध्ययन. p. 72.
5. Vivekananda. राष्ट्र को आवाहन. संकलन. pp. 72-73.
6. Vivekananda. राष्ट्र को आवाहन. संकलन. p. 73.
7. Acharya Shriram Sharma. ज्ञान योग, कर्म योग, भक्ति योग. p. 27.
8. Vivekananda S. स्वामी विवेकानंद: राष्ट्र को आवाहन. p. 23.
9. Vivekananda S. स्वामी विवेकानंद: राष्ट्र को आवाहन. p. 23.

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-Commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) license. This license permits sharing and redistribution of the article in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted under this license.

About the Author

नीरज डोभाल स्पर्श हिमालय विश्वविद्यालय, देहरादून, उत्तराखंड, भारत में शोधार्थी हैं। वे अपने शोधकार्य के माध्यम से अकादमिक अध्ययन एवं अनुसंधान के क्षेत्र में सक्रिय हैं। उनका शोध विश्वविद्यालयीय मार्गदर्शन में संचालित हो रहा है। वे शोध, विश्लेषण, ज्ञान-विस्तार तथा उच्च शिक्षा से संबंधित अकादमिक गतिविधियों में रुचि रखते हैं।

डॉ. विपिन कुमार भट्ट स्पर्श हिमालय विश्वविद्यालय, देहरादून, उत्तराखंड, भारत में शोध निर्देशक हैं। वे शोधार्थियों के मार्गदर्शन एवं अकादमिक अनुसंधान में सक्रिय भूमिका निभाते हैं। उनका कार्य उच्च शिक्षा, शोध निर्देशन तथा ज्ञान-विस्तार से संबंधित अकादमिक गतिविधियों पर केंद्रित है। वे गुणवत्तापूर्ण अनुसंधान को प्रोत्साहित करने में योगदान देते हैं।